समाज विकासमाला

नर्मदा

सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

समाज-विकास-माला : १०४

नर्मदा

भारत की एक पावन नदी और उसके तीर्थों का परिचय

लेखक
वैजनाथ महोदय

संपादक
यशपाल जैन

१९५९

सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

पहली बार : १९५९
मूल्य
सैंतीस नये पैसे

मुद्रक
सुरेंद्र प्रिंटर्स प्रा० लि०,
डिप्टी गंज, दिल्ली

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही है तो वही काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही ,आसान हों, जिनके विषय रोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देन की कृपा करें।

—मंत्री

पाठकों से

किसी भी देश में वहां की नदियों का बड़ा महत्व होता है। उनके प्रति लोगों की इतनी मानता और आत्मीयता होती है कि उन्हें 'माता' कहकर पुकारा जाता है।

हमारे देश में भी नदियों की बड़ी मानता है। गंगाजी का जल तो इतना पवित्र माना जाता है कि लोग संभालकर अपने घरों में रखते हैं।

हमारी बड़ी नदियों में नर्मदा को ऊंचा स्थान दिया जाता है। उसीका हाल इस पुस्तक में दिया गया है। वह कहां से निकलती है, कहां जाकर समुद्र में गिरती है, उसके किनारे कौन-कौन-से तीर्थ हैं, कितनी भूमि को वह हरा-भरा बनाती है, आदि-आदि बातों की जानकारी आपको इस पुस्तक से मिलेगी।

आप इसे अवश्य पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ायें।

—सम्पादक

नर्मदा

: १ :

वर्षा ऋतु में नये-नये मेघ आकाश में आते हैं, बिजली चमकती है और गड़ागड़ाहट होती है। बच्चे अपने नन्हें दिलों में सोचते हैं, वहां घनघोर युद्ध हो रहा है, तलवारें चमक रही हैं। कभी-कभी वे यह भी सोचते हैं कि काले-काले राक्षस भयंकर रूप धारण करके दौड़ रहे हैं और इंद्र भगवान तथा उनके देव उनका पीछा कर रहे हैं। जब भाग-दौड़, गड़गड़ाहट, बिजलियों की चमक आदि कुछ नहीं होते, आसमान में बादल शांति से तरह-तरह की सूरतें बनाते रहते हैं और चांद उनके बीच शान से दौड़ता है तो बच्चों को लगता है, चंदा मामा उनके साथ आंख-मिचौनी खेल रहे हैं।

इसी तरह पृथ्वी का नक्शा उठाकर देखते हैं तब देशों की बड़ी मनोरंजक शक्लें दिखाई देती हैं। कोई देश भालू के जैसा लगता है, कोई शेर के समान, जो खाने के लिए लपक रहा है, और कोई कांगारू के मानिंद अपने बच्चे को छाती से लिपटाये।

अपने देश के नक्शे को देखते हैं तो ऐसा लगता है, कोई महापुरुष लंबी-लंबी जटाएं फैलाये तपस्या करने बैठा है। या मोर-मुकुटधारी कृष्ण खड़े-खड़े अपनी बांकी

छवि के साथ बांसुरी बजा रहे है। परंतु ज्यादातर चित्रों में तो भारत माता हँसती हुई खड़ी दिखाई गई है। उसके आकाश को चूमनेवाले भाल–हिमालय–पर बरफ का मुकुट शोभा दे रहा है, शरीर पर उसने लहलहाते खेतों की हरी साड़ी पहन रखी है, नीचे सागर कमल लिये अपनी लहरों से माता के चरण पखार रहा है। उसकी कमर में एक शानदार चमकती हुई मेखला शोभा दे रही है।

यह मेखला है नर्मदा। परंतु भावुक भक्तों की निगाह वहां रुकती है तो वही भगवती का रूप धरकर उनके सामने आ जाती है। सिर पर रत्नों का मुकुट, मगर पर सवारी, तरंगे कल्लोल कर रही हैं। अनगिनत ऋषि और देवता उसकी स्तुति कर रहे हैं। एक हाथ में भगवान ऊंकार का शिवलिंग, दूसरे से उसपर कमल का फूल चढ़ा रही है।

परंतु यह कवि की कोरी कल्पना नहीं है। ठंडे देशों में जहां पहाड़ की चोटियां ही नहीं; जमीन भी बरफ से ढंक जाती है, नदियों और झीलों का पानी भी जम जाती है, वहां नदियों का रूप आनंद देनेवाला शायद न लगता हो, परंतु भारत जैसे गरम देशों में तो नदियां माता के समान हैं। गंगा-यमुना से दूर राजस्थान के रेगिस्तान में से जब हम दक्षिण में आते हैं और विंध्याचल की पहाड़ियों को लांघकर नर्मदा के तीर पर पहुंचते हैं तब तो ऐसा लगता है, मानो हम सचमुच माता की गोद में पहुंच गये हैं। दक्षिण की तरफ से सतपुड़ा की

दुर्गम घाटियों और पहाड़ियों को पार करके आते हैं तब भी ऐसा ही लगता है। नर्मदा का स्वरूप बहुत ही सुखद है। इसके दोनों किनारे बड़े ही मनोहर हैं। वे पेड़ों, छोटी-बड़ी पहाड़ियों और मैदानों से सुशोभित हैं। बहुत-से झरने उसकी शोभा को और बढ़ाते रहते हैं। फिर उसका बहाव सीधा सपाट नहीं है। कहीं ऊंचा तो कहीं नीचा, कहीं टेढ़ा-मेढ़ा तो कहीं बहुत ही चौड़ा, कहीं उथला तो कहीं गहरा, कहीं तूफानी तो कहीं धीर-गंभीर। कहीं-कहीं रास्ते में चट्टानों के आ जाने से वह छोटी-छोटी धाराओं में बंट गया है तो कहीं इतना संकरा हो गया है कि हिरन और बन्दर आसानी से छलांग मार-कर उस पार चले जायं।

नर्मदा के किनारे पर जितने मन्दिर है, उतने शायद ही किसी दूसरी नदी के तट पर हों। मन्दिरों के कलश और ध्वजाएं पेड़ों के बीच से चमकते हुए दिखाई देते हैं। नर्मदा पूर्व से पश्चिम को गई है। इसलिए इस-का रूप सारे दिन बड़ा रमणीय मालूम होता है। सबेरे सूर्य के उदय होने का और शाम को सूर्य के डूबने का दृश्य भी बड़ा भव्य होता है। जलवायु सभी ऋतुओं में अच्छी होने के कारण सारे संसार में यही एक नदी है जिसकी परिक्रमा यात्री सैकड़ों-हजारों की संख्या में बारहों महीने करते रहते है। परिक्रमा करनेवालों की पांच-पांच, दस-दस की टोलियां होती हैं। किसी सत्पु-रूष के साथ तो सौ-सौ, दो-दो सौ यात्री तक हो जाते हैं। इन्हें 'जम्मात' कहते हैं।

ऐसी एक पुरानी और प्रसिद्ध 'जम्मात' श्री गौरी-शंकर महाराज की है। इसमें सैकड़ों साधु हैं। पुराने गद्दीधारी महन्तों जैसा इनका ठाठ होता है। हाथी, घोड़े, तम्बू, डंका-निशान इनके साथ होते हैं। परंतु इन का खान-पान भक्तों से ही चलता है और साथ में कोई सामान नहीं होता। कभी-कभी भक्त लोग खाने की बढ़िया चीजें दे देते है, परंतु 'जम्मात' के मुख्य लोग तो 'पंचकणिका' का टिक्कड़ ही खाते हैं। 'जम्मात' में शाम की आरती के समय का दृश्य और नाद बड़ा आकर्षक और वैराग्य-जनक होता है। कहना नहीं होगा कि दूसरे परिक्रमा करनेवालों की भांति यह जम्मात भी चौमासे को छोड़कर किसी स्थान पर अधिक नहीं रुकती।

इन सारे यात्रियों का लाभ नदी के किनारे के गांवों को सहज ही मिलता रहता है। हमारी संस्कृति में नदियों और खासतौर पर नर्मदा को इसी कारण बड़ा पवित्र माना गया है।

"ग्रामे वा यदिवाऽरण्ये पुण्या सर्वत्र नर्मदा।"

शाम को जब अंधेरा हो जाता है, नदी-किनारे के गांवों और मंदिरों में दीपक जल जाते हैं और वहां आरती के घंटों की आवाज सुनाई देने लगती है, घाटों पर भक्तजन 'त्वदीय पाद पंकजं नमामि देवि नर्मदे' कहते हुए स्तोत्र-पाठ करते हैं। उस समय एक अनोखा समा बंध जाता है। दूर चट्टानों के बीच से गुजरते हुए प्रवाह की कल-कल निनाद इस गम्भीरता को और बढ़ा देता है।

: २ :

नर्मदा हमारी प्राचीन संस्कृति की ही नैहर नहीं है, बल्कि वह दक्षिण भारत और उत्तर भारत, द्रविड़ संस्कृति और आर्य-संस्कृति को जोड़नेवाली एक कड़ी है। यही नहीं, हमारे आदिवासी भाइयों की संस्कृति भी इसीके आस-पास विकसित हुई है। उन्होंने हजारों साल तक इसके तट पर राज्य किया है और जगह-जगह पर अपने दुर्ग खड़े किये हैं, जिनके खंडहर अब भी उनके पुराने वैभव की याद दिलाते हैं।

नर्म का अर्थ है 'क्रीडा'। छोटे-छोटे बच्चों से लेकर बड़े-बड़े तैराक भी इसके जल में आनंदपूर्वक क्रीड़ा कर सकते हैं, इसलिए इसे 'नर्मदा' कहते हैं। और यह उछलती-कूदती, छलांगें मारती (रेव) जाती है, इसलिए इसका नाम रेवा भी है।

नर्मदा अमर कण्टक से निकलती है। सोहागपुर तहसील में विन्ध्य और सतपुडा पहाड़ों में अमरकण्टक नाम का एक छोटा-सा गांव है। उसीके पास से नर्मदा एक गो-मुख से निकलती है।

यहां पर एक छोटा-सा कुंड बना दिया गया है और आस-पास कई छोटे-बड़े मंदिर खड़े कर दिये गये हैं। कहते हैं, किसी जमाने में यहांपर मेकल, व्यास, भृगु और कपिल आदि ऋषियों ने और स्वयं भगवान शंकर ने तपस्या की थी। यह स्थान समुद्र की सतह से कोई तीन हजार फुट से अधिक ऊंचा है।

अमर अण्टक जाने के कई मार्ग हैं। पूर्वी रेलवे की

कटनी-बिलासपुर-शाखा के पेंडरा-रोड स्टेशन पर उतरकर गोरेला ग्राम से कबीर चौतरा होते हुए अमर कण्टक पहुंचा जा सकता है। जबलपुर और मण्डला से भी जा सकते है।

अमर कण्टक से निकलकर नर्मदा विंध्य और सतपुड़ा के बीच से होकर भड़ोंच के पास खम्भात की खाड़ी



अमर कण्टक का कोटि तीर्थ-कुण्ड

में अरब सागर से जा मिलती है। अमर कण्टक से भड़ोंच तक नर्मदा को कोई आठसौ मील की यात्रा करनी पड़ती है। परिक्रमा करनेवालों के लिए यह लंबाई दोनों तरफ मिलकर लगभग सत्रहसौ मील से भी अधिक हो जाती है। बीच में कोई चारसौ छोटे-बड़े गांव दोनों तटों पर मिलाकर पड़ते हैं।

लोगों की राय है कि भारत की सबसे पुरानी संस्कृति का विकास नर्मदा के किनारे पर ही हुआ। कहते हैं, सारा संसार जब जल में मग्न हो गया, तब जो स्थान बचा था, वह था मार्कण्डेय ऋषि का आश्रम।

यह आश्रम नर्मदा के तट पर ऊंकारेश्वर में है । इसके अलावा मौजूदा महेश्वर के आस-पास जो खुदाई हुई है उसमें पाई गई हजारों वर्ष पुरानी चीजें भी इस बात को सिद्ध करती हैं ।

नर्मदा के किनारे बहुत-से स्थानों पर सुगंधित भस्म के टीले आज भी पाये जाते हैं। इससे यह अनुमान किया जाता है कि यहां बहुत-से यज्ञ हुए थे, जिनका उल्लेख पुराणों में भी मिलता है ।

: ३ :

नर्मदा एक पहाड़ी नदी है । कई स्थानों पर इसकी धारा बड़ी ऊंचाई से गिरती है । उसके पाट के बीच में भी अनेक स्थानों पर बड़ी-बड़ी चट्टानें आ गई हैं, जिनसे उसकी गहराई कम हो गई है । इस कारण नदी में नावें नहीं चल सकतीं । इसी तरह उसका प्रवाह बहुत नीचा होने और आस-पास का प्रदेश पहाड़ी होने के कारण इसके पानी से सिंचाई का काम भी नहीं लिया जा सकता । हां, उससे बिजली बनाने आदि की सुविधा हो सकती है । ऐसी सात योजनाओं पर भारत-सरकार विचार कर रही है । जांच-पड़ताल से यह भी पता चला है कि नर्मदा की घाटी में, यानी राजपीपला के पास संकरी घाटी से लेकर भड़ोंच के मैदानों तक, नर्मदा पर ही नहीं, उसकी सहायक नदियों पर कई स्थान ऐसे हैं, जहां बांध बांधकर वर्षा का पानी रोका जा सकता है और सिंचाई, बिजली तथा यातायात के

काम में लाया जा सकता है। इससे एक लाभ यह भी होगा कि भड़ोंच के मैदान बाढ़ के प्रकोप से पूरी तरह बच जायंगे।

हम देखते हैं कि आजकल बड़ी-बड़ी सड़कों और रेल के रास्तों के आस-पास बड़ी जल्दी नगर बस जाते हैं, क्योंकि वहां से आने-जाने की सुविधा तो होती ही है, कच्चा माल कारखानों में भेजने तथा तैयार माल के देश में जगह-जगह पहुंचाने में ये केन्द्र बड़े सहायक होते हैं। जब रेलें और बड़ी-बड़ी सड़कें तथा मोटर-बसें आदि नहीं थे, तब नदियां माल को लाने-ले जाने में बहुत मदद करती थीं। इसी वजह से उनके किनारे बड़े-बड़े शहर बस जाते थे। परंतु नर्मदा ऐसी नदी नहीं रही है। इस कारण उसके किनारे बड़े-बड़े शहर नहीं बस पाये। लेकिन इसी कारण वह एक बुराई से भी बच गई। जो बड़े नगर नदी के किनारे बसे हैं, उनकी गंदगी अक्सर नदियों में आती है। इसलिए उनका जल पहले जैसा शुद्ध नहीं रहा। किंतु नर्मदा इस बुराई से बची हुई है। इस कारण इसका जल अभी तक अमरकंटक से लेकर भडोंच तक शुद्ध, पवित्र और तंदुरुस्ती बढ़ानेवाला है।

दूसरे भीड़-भाड़ और कोलाहल कम होने के कारण नर्मदा के तटों पर साधकों को एकांत मिल जाता है। इसलिए तपश्चर्या के लिए रेवा को बहुत ही उत्तम माना गया है।

"रेवा तीरे तपः कुर्यात्।"

नर्मदा का उद्गम होने से अमरकंटक एक बड़ा तीर्थ है। गांव बहुत छोटा है। इंदौर की महारानी अहिल्याबाई की बनवाई एक बड़ी धर्मशाला यहां है। चारों ओर बियाबान जंगल है, जिसमें जानवरों का डर सदा बना रहता है। पछवा हवा जोर से चलती रहती है। जाड़े के दिनों में ठंडक बहुत रहती है। लगभग ३००० फुट से भी अधिक की उंचाई पर होने के कारण गरमी के दिनों में बड़ा आनंद रहता है।

नर्मदा जहां से निकलती है, वहां एक छोटा-सा कुण्ड बना हुआ है। कहते हैं, नागपुर के किसी भोंसले राजा ने इसे बनवाया था। कुण्ड के चारों ओर सीढ़ियां बनी हुई हैं। इसके आस-पास बने हुए मंदिरों में दो नर्मदा के, दो गौरीशंकर के, एक श्रीरामचंद्र का, एक मुरली-मनोहर का और दूसरे कई देवी-देवताओं के हैं।

अमर कण्टक में हर साल महा शिवरात्रि पर मेला लगता है। उस समय हजारों यात्री आते हैं, कुण्ड में स्नान करते हैं और शंकर की तथा नर्मदा की पूजा करते हैं। यहांपर पर्वत बहुत ही रमणीय है। जड़ी-बूटियों और फूल-फल का भण्डार है।

यहीं से नर्मदा की पावन यात्रा प्रारंभ होती है। सबसे पहला महत्व का स्थान आता है मंडला, जो अमर कंटक से कोई २०० मील की दूरी पर नर्मदा के उत्तरी तट पर बसा है। यहांपर नर्मदा का दृश्य बहुत सुंदर है। तीर पर सुंदर घाट बने हुए हैं और उनके ऊपर कई मंदिर।

नर्मदा के किनारे एक पुराना किला है, जिसे गढ़-मण्डला के राजा नरेन्द्र शाह ने सन् १६८० के आस-पास बनवाया था और मण्डला को अपनी राजधानी बना दिया था। किला अब शीर्ण-शीर्ण अवस्था में है। उसके अंदर राजेश्वरी का मंदिर है, जिसमें दूसरे देवताओं के साथ एक मूर्ति सहस्त्रार्जुन की है।

कुछ लोगों का कहना है कि यह मण्डला ही प्राचीन माहिष्मती है और भगवान शंकराचार्य का मण्डन मिश्र



माहिष्मती का अहिलेश्वर मंदिर

से यहींपर शास्त्रार्थ हुआ था। परंतु इस विषय में सब एक राय नहीं हैं।

मण्डला के पास पहाड़ियां हैं, जिनके कारण नर्मदा की धारा सैकड़ों छोटी-छोटी धाराओं में बंट गई है। इस-लिए इस स्थान का नाम सहस्त्रधारा हो गया है। कहते हैं, यहांपर राजा सहस्त्रबाहु ने अपनी हजार भुजाओं

से नर्मदा के प्रवाह को रोकने का प्रयत्न किया था। सहस्त्रधारा का दृश्य बहुत सुन्दर हैं।

मण्डला के बाद दूसरा सुदर स्थान है भेडा-घाट। यह जबलपुर से तेरह मील पर है। वहांतक पक्की सड़क है। जबलपुर से इटारसी जानेवाली रेलवे लाइन पर इसी नाम का रेलवे स्टेशन है। वहां से यह स्थान तीन मील पड़ता है। किसी जमाने में भृगु ऋषि ने यहां-पर तप किया था। उत्तर की ओर से वामन गंगा नाम की एक छोटी नदी नर्मदा में मिलती है। इस संगम (भेडा) के कारण ही इस स्थान को भेडा-घाट कहते हैं।



भेड़ा-घाट में संगमरमर की चट्टानों के बीच नर्मदा

भेडा-घाट से थोड़ी दूर पर नर्मदा का एक प्रपात है। इसे 'धुंआधार' कहते हैं। यहां नर्मदा की धारा कोई ४० फुट ऊपर से बड़ी तेजी-से नीचे गिरती है। जल के

कण दूर से धुएं के समान दीखते हैं। इसीसे इसे धुआंधार कहते हैं।

धुआंधार के बाद दो मील तक नर्मदा का प्रवाह सफेद संगमरमर की चट्टानों के बीच से गुजरता है। दोनों ओर सौ-सौ फुट से भी अधिक ऊंची सफेद दीवारें खड़ी हैं और इठलाती हुई नर्मदा उनके बीच से होकर निकलती है। चांदनी रात में यह दृश्य बड़ा ही आकर्षण लगता है। एक जगह पर तो ये चट्टानें इतनी पास आ जाती हैं कि बंदर बड़ी आसानी से इधर-से-उधर कूद सकते हैं। इसलिए इस जगह को 'बंदर-कूदनी' कहते हैं। हमारे देश के बहुत ही सुंदर स्थानों में से यह एक है।

भेडा-घाट में एक छोटी-सी पहाड़ी पर गौरीशंकर-मंदिर हैं। इसे 'चौसठ योगिनियों का मंदिर' भी कहते हैं। इस पहाड़ी के दोनों ओर नर्मदा बहती हैं। त्रिपुरी के महाराज कर्ण देव की महारानी अल्हणा देवी ने सन् ११५५-५६ में यह मंदिर बनवाया था। अब उसकी हालत अच्छी नहीं है। योगिनियों की मूर्तियां भी खंडित है।

भेडा-घाट के बाद दूसरे सुंदर स्थान हैं ब्राह्मण-घाट, रामघाट, सूर्यकुंड और होशंगाबाद। ब्राह्मण-घाट से थोड़ी दूर पर नर्मदा की दो धाराएं हो गई हैं। वहां बीच में एक छोटा-सा द्वीप बन गया है, जिसकी शोभा देखते ही बनती है। कुछ आगे जाकर धारा एक छोटी-सी पहाड़ी पर से गिरती है और वहां कई धाराओं में बंट जाती है। इसी कारण इस स्थान को 'सप्त धारा' कहते हैं। इन

धाराओं के नीचे बहुत बड़े-बड़े और गहरे कुंड बन गये हैं। इनके नाम भीम, अर्जुन और ब्रह्मदेव आदि के नाम पर पड़ गये हैं। कहते हैं, ब्रह्मदेव ने यहां यज्ञ किया था।

यहां से कुछ दूरी पर नर्मदा के दक्षिणी तट पर रानी दुर्गावती का बनवाया हुआ विशाल घाट और एक शिव-मंदिर है। इसीके पास अपने दोनों दांतों पर पृथ्वी को धारण किये वराह भगवान को एक मूर्ति है।

सांडिया में शांडिल्य ऋषि ने अपनी पत्नी सहित वर्षों तक तप किया था। कई बड़े-बड़े यज्ञ किये थे। सांडिया से पांच मील आगे नर्मदा के दक्षिणी तट पर माछा ग्राम के पास कुब्जा नदी का संगम है। इसे रामघाट कहते हैं। अयोध्या के राजा रंतिदेव ने प्राचीन काल में यहांपर महान बिल्व–यज्ञ–किया था। इस यज्ञ से एक विशाल ज्योति प्रकट हुई थी। तबसे इसका नाम 'बिल्वाम्रक तीर्थ' हो गया।

कुछ दूरी पर सूर्य-कुंड तीर्थ है। कहा जाता है कि यहां भगवान सूर्यनारायण ने अंधकासुर को मारा था।

बांदरा भान में तवा नाम की नदी नर्मदा में मिलती है। यहांपर प्रयाग के त्रिवेणी संगम की याद आ जाती है। कहा जाता यहां राजा वैश्वानर ने तप किया था।

बांदरा भान से छः मील पर दक्षिणी तट पर होशंगाबाद नगर है। कहते हैं, मालवा के सुल्तान होशंगशाह ने इसे बसाया था। यहां पहले जो गांव था उसका नाम 'नर्मदापुर' था। यहांपर सुन्दर पक्के घाट बने हैं। पास में एक धर्मशाला और नर्मदा का मंदिर है।

इसके बाद मेल-घाट हांडिया और नेमावर के पास पहुंच जाते हैं। मेल-घाट जामनेर नदी के संगम पर है। यहां आत्माराम बाबा नामक एक संत पुरुष की समाधि है। उनकी पुण्यतिथि पर यहां हर साल मेला लगता है।

नेमावर में सिद्धेश्वर महादेव का एक सुंदर प्राचीन मंदिर है। कला का यह एक देखने योग्य नमूना है। नेमावर नर्मदा की यात्रा का बीच का पड़ाव है। इसलिए इसे नाभि-स्थान भी कहते हैं। यहां से भड़ोंच और अमर कंटक समान दूरी पर है।

नेमावर और ऊंकारेश्वर के बीच धायड़ी कुंड नर्मदा का सबसे बड़ा जल-प्रपात है। ५० फुट की उंचाई से यहां नर्मदा का जल एक कुंड में गिरता है। जल के साथ-साथ इस कुंड में छोटे-बड़े पत्थर भी गिरते रहते हैं वे घुट-घुटकर सुंदर चिकने चमकीले शिवलिंग बन जाते हैं। सारे देश में शंकर के जितने भी मंदिर बनते हैं, उनके लिए शिवलिंग अक्सर यहीं से जाते हैं। मध्य रेलवे के बीद स्टेशन से यह स्थान कोई २० मील है। यहीं पुनासा की जल-विद्युत-योजना का बांध तबा नदी पर बन रहा है।

: ४ :

अब हम नर्मदा के तट पर बसे ऊंकारेश्वर नामक स्थान पर आ पहुंचे, जो प्राकृतिक सौंदर्य, इतिहास और साधना की दृष्टि से रेवा-तीर पर सबसे महान और पवित्र माना जाता है। पश्चिम रेलवे की छोटी लाइन पर

इन्दौर और खंडवा के बीच ऊंकारेश्वर-रोड नामक रेलवे स्टेशन से सात मील पर है। पक्की डामर की सड़क है। इन्दौर, खंडवा, ऊंकारेश्वर-रोड और सनावद से रोज मोटरें जाती हैं।

ऊंकारेश्वर एक प्राचीन तीर्थ है। यहां नर्मदा के बीच में एक टापू है, या यूं कहिये कि एक विशाल ऊंची पहाड़ी है, जिसके दोनों ओर से नर्मदा की धाराएं बहती हैं। टेकड़ी के दक्षिणी ढालपर ऊंकारेश्वर का मन्दिर है। दक्षिणवाली धारा के दोनों ओर बस्ती है। दक्षिणवाली बस्ती का नाम है 'विष्णु-पुरी' और उत्तरवाली बस्ती का नाम है 'शिव-पुरी'। यह द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक है। दक्षिण तट पर अमरेश्वर का सुन्दर मंदिर है। मंदिर अति प्राचीन है। नीचे एक धारा दक्षिण से आकर नर्मदा में एक गोमुख से होकर गिरती है। इसे 'कपिल धारा संगम' कहते हैं। कपिल-धारा के पूर्व में भी कुछ बस्ती है। उसका नाम ब्रह्मपुरी है।

विष्णुपुरी के पश्चिम में कुछ दूरी पर मार्कण्डेय-शिला नाम की चट्टान है। श्रद्धालु यात्री इसपर आ-कर लेटते हैं। उनका विचार है कि ऐसा करने से यम-पुर की यातनाओं से मुक्ति मिल जाती है। इसीके समीप पहाड़ी पर मार्कण्डेय ऋषि का मंदिर है और पास में श्री मामानंद चैतन्य का आश्रम है। विष्णुपुरी से शिव-पुरी तक नाव से जाते हैं। अब कुछ ही दिनों में यहां पुल बन जायगा। शिवपुरी में एक पक्के घाट के पास

जाकर नाव लगती है। इसे 'कोटितीर्थ' अथवा 'चक्रतीर्थ' कहते हैं। इस घाट के ऊपर ही पहाड़ी के ढाल पर ऊंकारेश्वर का मंदिर है। टापू को मान्धाता कहते हैं। कहा जाता है कि ईक्ष्वाकु वंश के प्रतापी महाराज मांधाता ने यहां भगवान शंकर की आराधना की थी। उनके तप से प्रसन्न होकर भगवान ने यह स्वीकार किया था कि वह भक्तों के कल्याण के लिए सदा यहां निवास करेंगे। ऊंकारेश्वर की स्थापना तभी से हुई है। एक और भी चमत्कारभरी बात है। इस पहाड़ी का आकार ॐ जैसा है।

पहाड़ी बड़ी रमणीक है। इसपर कई मन्दिर और पवित्र स्थान हैं। पहाड़ी के ऊपर विशाल मैदान है,



श्री सिद्धनाथजी का प्राचीन भग्न मन्दिर ऊंकारेश्वर

जहां से आस-पास दूर-दूर तक का प्रदेश बड़ा ही मनो-

रम दिखाई देता है। जान पड़ता है कि यहां पहले अच्छी बस्ती थी, जिसके चारों तरफ दीवार थी। दीवार के कुछ खंडहर और दरवाजे अभी तक बचे हुए हैं। अंदरवाले दरवाजे के पास अष्टभुजा देवी का तथा दूसरे स्थानों पर बहुत ही विशाल सुन्दर मूर्तियां अब भी खड़ी हैं। मैदान के पूर्ववाले भाग में एक बड़ा मंदिर था, जिसके खंडहरों के रूप में कुछ खम्भे, ओटला, गर्भगृह और छत के कुछ हिस्से ही अब बचे हैं। मंदिर की छत लगभग पंद्रह फुट ऊंची होगी, और ओटला दस फुट। ओटले के चारों तरफ पांच-पांच फुट ऊंचे सुडौल हाथियों की कतार खुदी हुई है। इनको देखकर कल्पना हो सकती है कि मंदिर और यह सारी बस्ती जब कभी अपने पूर्ण वैभव में रहे होंगे। इस मन्दिर से कुछ दूरी पर दूसरी धारा के, जिसका नाम कावेरी है, उत्तर तट पर प्रसिद्ध जैनतीर्थ सिद्धवर कूट है।

ऊंकारेश्वर और अमरेश्वर का यह पुण्य धाम जाने कितने योगियों और ऋषियों का सिद्ध-क्षेत्र रहा है। इस टापू में और आस-पास कहीं भी चले जाइये, किसी-न-किसी महापुरुष या ऋषि का नाम उसके साथ जुड़ा हुआ मिलेगा। शंकराचार्य, उनके गुरु गोविन्द पादाचार्य और उनके भी गुरु गौड पादाचार्य यहीं रहे थे। उनके बाद भी आजतक यह सिद्धों और तपस्वियों का आश्रम-स्थान रहा है।

ऊंकारेश्वर में वर्ष में दो बार बड़े मेले लगते हैं—कार्तिकी पूर्णिमा पर और महा शिवरात्रि पर।

कार्तिकी-पूर्णिमा का मेला खास बड़ा होता है।

ऊंकारेश्वर के आस-पास दोनों तीरों पर बड़ा घना बन है, जिसे 'सीता का वन' कहते हैं। लोगों का कहना है कि वाल्मीकि ऋषि का आश्रम यहीं कहीं था।

ऊंकारेश्वर से महेश्वर कोई ४० मील है। इसके बीच दो-तीन स्थान उल्लेखनीय हैं। सबसे पहले रावेट आता है। यहां नर्मदा का पाट इतना उथला है कि आदमी पैरों चलकर उसे पार कर सकता है। किसी जमाने में फौजें यहीं से नर्मदा को पार करती थीं। पेशवाओं की सेनाएं इधर से ही गुजरती थीं। परम प्रतापी पेशवा बाजीराव का उत्तर की यात्रा करते हुए यहीं देहांत हुआ था। रावेट में उनकी समाधि है।

इसके पड़ौस में ससाबरड नामक एक स्थान में रेणुका माता का मन्दिर है। कहते हैं, परशुराम ने अपने पिता जमदग्नि ऋषि की आज्ञा से अपनी माता का सिर यहीं काटा था और फिर पिता से वरदान लेकर उन्हें जिला भी दिया था।

इसके बाद महेश्वर से पहले नर्मदा के उत्तर तट पर एक कस्बा हैं मंडलेश्वर। अनेक विद्वानों का मत है कि मंडन मिश्र का असली स्थान यही है और महेश्वर प्राचीन माहिष्मती है। मण्डलेश्वर से महेश्वर लगभग पांच मील है। संभव है, माहिष्मती का फैलाव पुराने जमाने में यहांतक रहा हो। भगवान् शंकराचार्य अपनी दिग्विजय-यात्रा में जिस रास्ते से आये, उसका वर्णन 'शांकर-दिग्विजय' में है। वह वर्णन महेश्वर और मण्डलेश्वर की

स्थिति से और आसपास के प्रदेश से मिलता है।

मण्डलेश्वर में एक पुराना मन्दिर है, जिसमें मण्डन मिश्र, भारती और शंकराचार्य की मूर्तियां हैं। परंतु इनके नाम दूसरे हैं। भारती का नाम सरस्वती है और जिसे शंकराचार्य की मूर्ति बताया जाता है, उसे वहां कार्तिकेय स्वामी कहा जाता है। परंतु ये दोनों कार्तिकेय स्वामी और सरस्वती शंकर के मंदिर में कहीं नहीं देखे गये। इससे साफ है कि वास्तव में यह मण्डन मिश्र का ही स्थान है। मंदिर का वर्णन भी 'शांकर-दिग्विजय' के वर्णन से मिलता-जुलता है।

इंदुमती के स्वयंवर के लिए आये हुए अनेक राजाओं में अनूप देश के राजा, माहिष्मती के अधिपति का उल्लेख कालिदास ने 'रघुवंश' में किया है। उसमें इंदुमती की सखी सुनंदा कहती है—अपने महल की खिड़की में बैठकर रेवा को देखने का आनंद उठाना हो—प्रासाद जालैर्जलवेणु रम्याम् रेवां - मदिप्रेक्षुतु मस्तिकामः—तो अनूप देश के इस सकल गुणों से विभूषित —अनूप देशस्य गुणैरनूनम्—नरेश को वर लो। महेश्वर से यह वर्णन पूरी तरह मिलता है।

आधुनिक इतिहास में भी महेश्वर का अपना स्थान है। महारानी अहिल्याबाई होल्कर का नाम सारे देश में विख्यात है। महेश्वर इनकी राजधानी था। उनके समय से लेकर अबतक यह वस्त्रकाल का एक सुंदर केन्द्र रहा है। महेश्वर में किला, मंदिर, अहिल्याबाई का महल, उनकी छत्री और घाट देखने योग्य हैं।

घाटों को देखकर तो काशी की याद आ जाती है। सन् १९४८ में महात्मा गांधी की अस्थियां यहां नर्मदा में विसर्जित की गई थीं।

महेश्वर के सामने नर्मदा के उस पार एक छोटा-सा गांव है, जिसका नाम नावड़ाटवड़ी है। 'वायु पुराण' में इसे स्वर्ण-द्वीप तीर्थ कहा गया है। यहां शालिवाहन का मन्दिर है।

दक्षिण के शालिवाहन या सातवाहन राजाओं ने मिट्टी में से सिपाही पैदा करके यवनों को नर्मदा-पार खदेड़ दिया था। इसलिए नर्मदा के दक्षिण में शालिवाहन-शक माना जाता है। अब तो भारत-सरकार ने इसे सारे देश के लिए जारी कर दिया है। उसमें तिथि-गणना का क्रम कुछ बदल दिया गया है।

महेश्वर से पश्चिम में सहस्त्रधारा जल-प्रपात है। यहां नर्मदा के बीच में चट्टानें आ गई हैं, जिनके बीच से गुजरते हुए वहां सैकड़ों छोटी-बड़ी धाराएं बन गई हैं। इसका कलकल निनाद दूर-दूर तक सुनाई देता है। इन चट्टानों के कारण महेश्वर के पास एक कुंड-सा बन गया है, जहां अथाह जल भरा रहता है।

कहते हैं, एक बार सहस्त्रार्जुन अपनी रानी के साथ यहां जल-क्रीड़ा का रहा था। ऊपर यानी पूर्व में नर्मदा के उत्तर-तट पर शंकर को प्रसन्न करने के लिए कहीं रावण तपश्चर्या कर रहा था। क्रीड़ा करते हुए सहस्त्रार्जुन ने नर्मदा का प्रवाह रोक दिया। जब जल बढ़ता हुआ रावण के आसन तक जा पहुंचा तो उसे रोष

हुआ। वह देखने के लिए चला कि कौन शरारत कर रहा है। नीचे पश्चिम में जाकर देखा तो असली बात मालूम हुई। उधर सहस्त्रार्जुन की निगाह उसपर पड़ी, तो उसे वह कुछ विचित्र-सा जंतु जान पड़ा। उसने कौतूहलवश उसे बच्चों के खेलने के लिए पकड़कर महल में भिजवा दिया। वह वहां कई दिन तक पड़ा रहा। अंत में पुलस्त्य ऋषि ने जाकर उसे छुड़ाया। महेश्वर से कोई आठ मील पर खलघाट है। बंबई-आगरा-सड़क यहीं से नर्मदा को एक पुल पर से होकर पार करती है। कहते हैं, प्राचीन-काल में ब्रह्माजी ने यहां तप किया था। इस स्थान को 'कपिला तीर्थ' भी कहते हैं।

कपिला तीर्थ से ७ मील पश्चिम में धर्मपुरी है। 'स्कंद-पुराण' और 'वायु पुराण' में इसे महर्षि दधीचि का आश्रम बताया गया है। वृत्रासुर के वध के लिए इंद्र ने उनसे हड्डियों की मांग की थी और महर्षि ने प्रसन्नता के साथ दे दी थीं। उनसे वज्र बनाकर इंद्र ने वृत्रासुर को मारा था।

धर्मपुरी के पास नर्मदा में एक छोटा-सा टापू बन गया है, जहां शंकर का एक सुंदर मंदिर है। यही नागेश्वर नामक एक स्थान है, जहांपर मालवा के सुलतान बाजबहादुर की प्रेयसी भानुमती के गुरू रहते थे। भानुमती नर्मदा की बड़ी भक्त थी और संगीत में बहुत ही निपुण भी। नर्मदा के तीर पर वह जहां-तहां बैठ जाती और मधुर कण्ठ से गीत गाती। भानुमती बहुत ही रूपवती थी। एक बार सुलतान के कानों में उसके

संगीत की ध्वनि पड़ गई। वह उसपर मुग्ध हो गया और उसकी तलाश में निकल पड़ा। ढूंढते-ढूंढते अंत में उसे पता लग गया। उसने भानुमति से याचना की। मालवा-निमाड़ में भानुमती और बाजबहादुर के प्रेम की कहानियां अबतक सुनी जा सकती हैं। अंत में भानुमती ने बाजबहादुर के प्रेम को स्वीकार कर लिया, परंतु एक शर्त के साथ। वह नर्मदा को छोड़कर कहीं नहीं जायगी। नर्मदा का ही जल पीयेगी और रोज नर्मदा का दर्शन करेगी। कहते हैं, किसी महात्मा के प्रताप से माण्डव में नर्मदा एकाएक प्रकट हो गईं। वहां एक कुण्ड बनवा दिया गया, जिसे रेवा-कुण्ड कहते है, और उसीके पास भानुमती का महल भी बनवा दिया गया, जहां से प्रतिदिन वह नर्मदा की धारा का दर्शन किया करती थी। नर्मदा की परिक्रमा करनेवाले धर्मपुरी से रेवा-कुण्ड तक जाते हैं और फिर लौटकर प्रवाह के साथ हो जाते हैं।

माण्डव के किले में अनेक दर्शनीय स्थान हैं। पुराने जमाने में इसे मण्डप-दुर्ग कहते थे। यह बहुत बड़ा नगर था। कहते हैं, कोई सात सौ तो जैन-मंदिर ही थे। विद्या का केन्द्र था। मुसलमान सुलतानों के काल में भी उसकी बड़ी शान थी। भगवान रामचन्द्र का एक प्राचीन मंदिर है, जिसमें श्रीराम की मूर्ति बहुत सुन्दर है।

धर्मपुरी के बाद कुश ऋषि की तपोभूमि शुक्लेश्वर, देवों की माता अदिति की तपस्या द्वारा पुन्नत ऋद्धेश्वर और सूर्य-वंश के राजा ब्रह्मदत्त की यज्ञ-भूमि ऊकलवाडा

होते हुए हम चिरवलदा पहुंचते हैं। यहां महर्षियों (विश्वामित्र, जमदग्नि, भरद्वाज, गौतम, अत्रि, वशिष्ठ, कश्यप) ने तप किया था। आज के युग में भी यतिवर वासुदेवानन्द सरस्वती की तपश्चर्या का यह साक्षी रहा है। सामने दक्षिण तट पर राजघाट है, जहां सन् १९४८ में महात्माजी की अस्थियां विसर्जित की गई थीं। यहां पर फरवरी को हर साल सर्वोदय-मेला लगता हैं। यहां से तीन मील पर दक्षिण में बड़वानी नामक एक सुन्दर कस्बा हैं, जो स्वराज्य के पहले इसी नाम के एक छोटे-से राज्य की राजधानी था।

: ५ :

बड़वानी के पास सतपुड़ा की पहाड़ियों में एक जैन तीर्थ है, जिसे 'बावन गजाजो' कहते हैं। एक पहाड़ी की बगल में संपूर्ण चट्टान में खुदी यह एक विशाल खड़ी मूर्ति कोई ८४ फुट ऊंची है। इसी पहाडी के ऊपर एक मंदिर भी है, जिसकीं जैनियों और हिंदुओं में समान रूप से मानता है। हिंदू लोग इसे 'दत्तात्रेय की पादुका' कहते हैं। जैन इसे 'मेघनाद और कुंभकर्ण की तपोभूमि' मानते हैं। इधर के शिखरों में यह सतपुड़ा का शायद सबसे ऊंचा शिखर है और जब आसमान साफ होता है तो माण्डव यहां से दिखाई देता है।

सतपुड़ा का यह भाग गोवर्धन क्षेत्र भी माना जाता है। यह निमाडी गोवंश का घर है। यहां के गाय और बैल खेती के काम के विचार से बहुत अच्छे माने जाते हैं। बड़े बलिष्ठ और पानीदार। यों तो होशं-

गाबाद से लेकर हिरनफाल तक निमाड़ में अच्छे बैल होते हैं, परंतु यह भाग विशेष रूप से प्रसिद्ध है। गायों की वह नस्ल दूध देने में इतनी अच्छी नहीं हैं।

बीजारान में विंध्यवासिनी देवी ने, धर्मराज तीर्थ में धर्मराज ने और हिरनफाल में हिरण्याक्ष ने तप किया था। यहांपर नर्मदा का पाट बहुत ही संकरा है।

कुछ मील पश्चिम में बढ़ने पर हापेश्वर की शोभा देखते बनती है। पहाड़ी पर शंकर का एक भव्य और सुन्दर मन्दिर है, जहां से आस-पास का दृश्य बड़ा ही मनोहारी लगता हैं। यहांपर वरुण ने भगवान शंकर को प्रसन्न करने के लिए तप किया था। इस सारे प्रदेश में बड़े-बड़े और दुर्गम वन हैं।

हापेश्वर के बाद उल्लेखनीय तीर्थ है शूलपाणी। सिंदुरी संगम से घने जंगली और पहाड़ों के बीच से होकर दस-बारह मील चलने पर नर्मदा के दक्षिण तट पर शूलपाणी तीर्थ मिलता है। यहां शूलपाणी का बहुत प्राचीन मंदिर है। कमलेश्वर, राजराजेश्वर आदि और भी कई मन्दिर है। यहीं पास में ब्रह्मदेव द्वारा स्थापित ब्रह्मेश्वर लिंग भी बताया जाता है। इसके दक्षिण में शेषशायी भगवान् का मन्दिर है। दीर्घतपा ऋषि का कुलसहित यहीं उद्धार हुआ बताते हैं। काशिराज चित्र-सेन को भी यहीं सिद्धि मिली थी।

गरुडेश्वर में भगवान दत्तात्रेय के मंदिर और यति-वर वासुदेवानंद सरस्वती की समाधि है।

शुक्रतीर्थ, अकतेश्व, कर्नाली, चांदोद, शुकेश्वर,

व्यासतीर्थ होते हुए हम अनसूया माई पहुंचते हैं, जहां अत्रि ऋषि की आज्ञा से देवी श्री अनसूयाजी ने पुत्र-प्राप्ति के लिए तप किया था और उससे प्रसन्न होकर ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देवताओं ने यहीं दत्तात्रेय के रूप में उनका पुत्र होना स्वीकार कर जन्म ग्रहण किया था। कंजेठा में शकुन्तला-पुत्र महाराज भरत ने अनेक यज्ञ किये। सीनोर में ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से अनेक पवित्र स्थान हैं।

सीनोर के बाद भड़ोंच तक कई छोटे-बड़े गांव, तीर्थ और तपश्चर्या के स्थान हैं। अंगारेश्वर में मंगल ने तप करके अंगारेश्वर की स्थापना की थी। निकोरा में पृथ्वी का उद्धार करने के बाद वराह भगवान् ने इस तीर्थ की स्थापना की। लाडवां में कुसुमेश्वर तीर्थ है। मंगलेश्वर में कश्यप कुल में पैदा हुए भार्गव ऋषि ने तप किया था। शुक्लतीर्थ में नर्मदा के बीच टापू में एक विशाल बरगद का पेड़ है। शायद यह संसार में सबसे बड़ा वट-वृक्ष है। यहां महात्मा कबीर ने कुछ समय तक निवास किया था। इसलिए इसे 'कबीर-वट' कहते हैं। इसके नीचे हजारों आदमी विश्राम कर सकते हैं।

इसके बाद कुछ मील चलकर हम भडोंच पहुंचते हैं, जहां नर्मदा समुद्र में मिल जाती है। पश्चिम रेलवे का यह एक प्रमुख स्टेशन है। नगर की लम्बाई कोई तीन मील और चौड़ाई एक मील है। यहां पहले एक किला भी था, जिसे सिद्धराज जयसिंह ने बनवाया था। अब तो उसके खण्डहर हैं। भडोंच को भृगु कच्छ अथवा

भृगु-तीर्थ भी कहते है। यहां भृगु ऋषि का निवास था। यहीं राजा बलि ने दस अश्वमेध-यज्ञ किये थे। सोमनाथ का मंदिर भी इसी स्थान पर है। भडोंच नगर की पंच-क्रोशी में कोई पचास से ऊपर पवित्र स्थान बताये जाते हैं।

भडोंच के सामने के तीर पर समुद्र के निकट विमलेश्वर नामक स्थान है। परिक्रमा करनेवाले यहां से नाव में बैठकर समुद्र द्वारा नर्मदा के उत्तर तट पर लोहारिया गांव के पास उतरते हैं। यह फासला १३ मील का है।

वैसे तो हर देश में नदियों की अपनी महिमा होती है, लेकिन हमारे देश में तो उन्हें बहुत ही ऊंचा स्थान दिया गया है।

भारत की नदियों में नर्मदा का अपना महत्व है। न जाने कितनी भूमि को उसने हरा-भरा बनाया है और उसके किनारे पर बने तीर्थ न जाने कब से अनगिनत नर-नारियों को प्रेरणा देते रहे हैं, आगे भी देते रहेंगे।

'मंडल' द्वारा प्रकाशित प्राप्य साहित्य

आत्मकथा	(गांधीजी)	४.००
प्रार्थना-प्रवचन : २ भाग	,,	५.५०
गीता माता	,,	४.००
पंद्रह अगस्त के बाद	,,	१.५०, २.००
धर्मनीति	,,	१.५०, २.००
द० अफ्रीका का सत्याग्रह		३.५०
मेरे समकालीन	,,	५.००
आत्म-संयम	,,	३.००
गीता-बोध	,,	०.५०
अनासक्तियोग	,,	१.५०
ग्राम-सेवा	,,	०.३७
मंगल-प्रभात	,,	०.३७
सर्वोदय	,,	०.३७
नीति-धर्म	,,	०.३७
आश्रमवासियों से	,,	०.३७
हमारी मांग	,,	१.००
एक सत्यवीर की कथा	,,	०.२५
आत्मकथा (संक्षिप्त)	,,	१.००, १.५०
हिंद-स्वराज्य	,,	०.७५
अनीति की राह पर	,,	१.००
बापू की सीख	,,	०.५०
गांधी-शिक्षा (तीन भाग)	,,	१.१२
आज का विचार (दो भाग)		०.७५
ब्रह्मचर्य (दो भाग)	,,	१.७५
गांधीजी ने कहा था (९ भाग)		२.२५
शांति-यात्रा (विनोबा)		१.५०
विनोबा के विचार : २ भाग		३.००
गीता-प्रवचन	(विनोबा)	१.५०
जीवन और शिक्षण	,,	२.००
स्थितप्रज्ञ-दर्शन	,,	१.००
ईशावास्यवृत्ति	,,	०.७५
ईशावास्योपनिषद्	,,	०.१२
सर्वोदय-विचार	,,	१.१२
स्वराज्य-शास्त्र	,,	०.७५
गांधीजी को श्रद्धांजलि	,,	०.३७
भूदान-यज्ञ	(विनोबा)	०.२५
राजघाट की संनिधि में	,,	०.६२
विचार-पोथी	,,	१.००
सर्वोदय का घोषणा-पत्र	,,	०.२५
जमाने की मांग	,,	०.१२
उपनिषदों का अध्ययन	,,	१.००
मेरी कहानी	(नेहरू)	८.००
,, (संक्षिप्त)	,,	२.५०
हिंदुस्तान की समस्याएं	,,	२.००
लड़खड़ाती दुनिया	,,	२.००
राष्ट्रपिता	,,	२.००
राजनीति से दूर	,,	२.००
विश्व-इतिहास की झलक	(सं)	५.००
सं० हिंदुस्तान की कहानी	,,	२.५०
नया भारत	,,	०.२५
आजादी के आठ साल	,,	०.२५
गांधीजी की देन	(रा० प्रसाद)	१.५०
आत्मकथा	,,	८.००
महाभारत-कथा	(राजाजी)	५.००
कुब्जा-सुंदरी	,,	२.००
शिशु-पालन	,,	०.५०
दशरथनंदन श्रीराम	,,	६.००
मैं नहीं भूल सकता	(काटजू)	२.५०
कारावास-कहानी	(सु० नै०)	१०.००
गांधी की कहानी	(लु० फि०)	४.००
भारत-विभाजन की कहानी		४.००
बापू के चरणों में		२.५०
इंग्लैंड में गांधीजी		२.००
बा, बापू और भाई		०.५०
गांधी-विचार-दोहन		१.५०
सत्याग्रह-मीमांसा		३.५०
बुद्ध-वाणी	(वियोगी हरि)	१.००
संत-सुधासार (संक्षिप्त)	,,	६.००
श्रद्धाकण	,,	१.००
अयोध्याकांड	,,	१.००

165

भागवत-धर्म	(ह० उ०)	५·५०
श्रेयार्थी जमनालालजी (सं)	,,	२·००
स्वतंत्रता की ओर	,,	४·००
बापू के आश्रम में	,,	१·००
मानवता के झरने	(मावलंकर)	१·५०
बापू	(घ० बिड़ला)	२·००
रूप और स्वरूप	,,	०·६२
डायरी के पन्ने	,,	१·००
ध्रुवोपाख्यान	,,	०·२५
स्त्री और पुरुष	(टाल्स्टाय)	१·००
मेरी मुक्ति की कहानी	,,	१·५०
प्रेम में भगवान	,,	२·००
जीवन-साधना	,,	१·२५
कलवार की करतूत	,,	०·२५
हमारे जमाने की गुलामी	,,	०·७५
बुराई कैसे मिटे ?	,,	१·००
बालकों का विवेक	,,	०·५०
हम करें क्या ?	,,	३·५०
धर्म और सदाचार	,,	१·२५
अंधेरे में उजाला	,,	१·५०
ईसा की सिखावन	,,	१·००
कल्पवृक्ष	(वा० अग्रवाल)	२·००
लोक-जीवन	(कालेलकर)	३·५०
साहित्य और जीवन	(चतुर्वेदी)	२·००
कब्ज	(म० प्र० पोद्दार)	१·५०
हिमालय की गोद में	,,	२·००
कहावतों की कहानियां	,,	२·००
राजनीति प्रवेशिका	(लास्की)	१·००
जीवन-संदेश	(ख० जिब्रान)	१·२५
अशोक के फूल	(ह० प्र० द्विवेदी)	३·००
जीवन-प्रभात	(कालेलकर)	५·००
कांग्रेस का इतिहास	(संक्षिप्त)	५·००
पंचदशी		१·००
सप्तदशी		२·००
रीढ़ की हड्डी		१·५०
अमिट रेखाएं		३·००

तामिल-वेद	(तिरुवल्लुवर)	१·५०
थेरी-गाथाएं		१·५०
बुद्ध और बौद्ध साधक		१·५०
हमारे गांव की कहानी		१·५०
खादी द्वारा ग्राम-विकास		०·७५
साग-भाजी की खेती		३·००
ग्राम-सुधार		१·२५
पशुओं का इलाज		०·५०
चारादाना		०·२५
रामतीर्थ-संदेश	(३ भाग)	१·१२
रोटी का सवाल	(क्रोपाटकिन)	३·००
नवयुवकों से दो बातें	,,	०·३७
पुरुषार्थ	(डा० भगवानदास)	६·००
काश्मीर पर हमला		२·००
शिष्टाचार		०·५०
तट के बंधन	(वि० प्रभाकर)	२·००
भारतीय संस्कृति	(साने गुरुजी)	३·५०
आधुनिक भारत		५·००
फलों की खेती		२·५०
मैं तंदुरुस्त हूं या बीमार ?		०·५०
भा० नवजागरण का इतिहास		३·००
गांधीजी की छत्रछाया में		२·५०
भागवत-कथा		३·५०
जय अमरनाथ		१·५०
हमारी लोक-कथाएं		१·५०
संस्कृत-साहित्य-सौरभ (३३ पुस्तकें) प्रत्येक		०·३७
समाज-विकास-माला (८९ पुस्तकें) प्रत्येक		०·३७
कृषि-ज्ञान-कोष	(डा० व्यास)	४·००
प्रकाश की बातें		१·५०
ध्वनि की लहरें		१.५०
गरमी की कहानी		१·५०
धरती और आकाश		१·५०
समुद्र के जीव-जंतु		१·५०
नवीन यात्रा	(मनोज बसु)	२·००

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. जंगल की सैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के बोल
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी जमीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरुस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३. कस्तूरबा गांधी
३४. शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९. गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी महेता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कब्रों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हारूं-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. सच्चा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी : भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी : भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरजराज
७१. नाना फड़नवीस
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानियां
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. आनबान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा अबाबील
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६. अमरनाथ
१०७. महारानी अहिल्याबाई
१०८. पढ़ेंगे-लिखेंगे...
१०९. कोणार्क
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक का ३७ न० पै०

मूल्य
सैंतीस नये पैसे